Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 10 No. : 3, April - 2024

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता"

(Gender Sensitivity & Equality)

दिनांक : 27 अप्रैल, 2024, शनिवार

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर

INTERNATIONAL JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & MANAGEMENT STUDIES

I.J.S.S.M.S

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

ISRS International Scientific Research Solution

UKAF

International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S.No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	डॉ. (सी.) गेटा राम सुरेश परिहारा	1-2
2	लैंगिक समानता में परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका	अंकिता कुमारी	3-5
3	लैंगिक संवेदनशीलता और इ–सामग्री	डॉ. रामधारी रामावत [illegible]	6-10
4	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	डॉ. (सी.) गेटा राम कमलेश शर्मा	11-13
5	भारतीय परिप्रेक्ष्य में लैंगिक समानता और नीति निर्धारण का एक अध्ययन	डॉ. नवल सिंह बीरेन्द्र कुमार	14-17
6	लैंगिक समूह और संवेदनशीलता	कमलेश शर्मा	18-20
7	लैंगिक असमानता : कारण और समाधान	डॉ. प्रियंका जैन	21-24
8	लैंगिक समानता में परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका	डॉ. [illegible] कुमावत	25-26
9	लैंगिक संवेदनशीलता के विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका	डॉ. पूजा कनौजिया [illegible] शर्मा	27-30
10	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	नीतू कुमारी	31-33
11	लैंगिक समानता की आवश्यकता	डॉ. पूजा कनौजिया	34-35
12	लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता	राजेश कुमार शर्मा	36-37
13	लैंगिक समानता में परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका	डॉ. अरुण के. शर्मा	38-39
14	लैंगिक समानता में परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका	प्रो. डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय उपासना शर्मा	40-41
15	लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता	डॉ. प्रकाश नागर	42-45
16	विद्यालयस्तर में लैंगिक संवेदनशीलता	कमलेश कुमार शर्मा	46-47
17	लैंगिक समानता में परिवार की भूमिका	डॉ. अनिता जैन	48-51
18	भारत में लैंगिक असमानता को दूर करने के नीतिगत निर्णय	डॉ. कल्पना शर्मा अर्चना शर्मा	52-55
19	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	[illegible]	56-58
20	कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (निवारण) निषेध व निवारण अधिनियम 2013	डॉ. मोहनलाल जाट भूपेन्द्र सिंह	59-61
21	समाज जीवन में सफल होने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता की उपयोगिता	डॉ. दुर्गा भोजक दलीप सिंह सोढ़ावत	62-65
22	लैंगिक असमानता कारण एवं उपाय	डॉ. रेखा मालपानी	66-68
23	छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा व उनके माता–पिता की तत्संबंधी आकांक्षा तथा व्यावसायिक स्तर के पूर्वनिर्धारण का अध्ययन	डॉ. सन्तोष उपाध्याय पूजा कल्पना सोनी	69-74
24	लैंगिक समूह और संवेदनशीलता	डॉ. [illegible] कुमावत [illegible] कुमार [illegible]	75-77
25	विद्यालयस्तर में लैंगिक संवेदनशीलता	डॉ. [illegible] गौतम सीमा बैरवा	78-80
26	लैंगिक समानता एवं समान नागरिक संहिता	[illegible]	81-85
27	भारतीय परिप्रेक्ष्य में लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता	डॉ. सतीश चन्द्र [illegible] श्री मुकेश कुमार शर्मा	86-91

लैंगिक समानता में परिवार की भूमिका

डॉ. अमिता जैन
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं, नागौर

सारांश :– लैंगिक समानता में परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ साल में लैंगिक समानता की दिशा में काफी कामयाबी मिली है, फिर भी महिलाओं की परम्परागत भूमिका को लेकर समाज की जो सोच है वो महिलाओं की शिक्षा और रोज़गार के मौके मिलने को बहुत हद तक प्रभावित करते हैं। प्रत्येक बच्चे का अधिकार है कि उसकी क्षमता के विकास का पूरा मौका मिले, लेकिन लैंगिक असमानता की कुरीति की वजह से वह ठीक से फल फूल नहीं पाते है। भारत में लड़कियों और लड़कों के बीच न केवल उनके घरों और समुदायों में बल्कि हर जगह लिंग असमानता दिखाई देती है। पाठ्यपुस्तकों, फिल्मों, मीडिया आदि सभी जगह उनके साथ लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है। लैंगिक समानता का मतलब है कि सभी लिंग बिना किसी भेदभाव के अपना मनचाहा करियर, जीवनशैली और क्षमताएं अपनाने के लिए स्वतंत्र हैं। उनके अधिकार, अवसर और समाज तक पहुंच उनके लिंग के आधार पर भिन्न नहीं हैं। लैंगिक समानता का मतलब यह नहीं है कि सभी के साथ बिल्कुल एक जैसा व्यवहार किया जाए। उनकी अलग–अलग जरूरतों और सपनों को समान रूप से महत्व दिया जाता है।

मूल शब्द :– शिक्षा, समर्थन, लैंगिक समानता, समरसता, साझा जिम्मेदारी

प्रस्तावना :– लैंगिक समानता में परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। परिवार एक समाज में लैंगिक समानता को स्थापित करने और बनाए रखने का मुख्य संगठन होता है। एक समर्थ, संतुलित परिवार जीवन के सभी क्षेत्रों में लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करता है। परिवार में लैंगिक समानता को स्थापित करने के लिए कई तरह के कदम उठाए जा सकते हैं, जैसे– शिक्षा, समर्थन, बातचीत, उदाहरण, साझा जिम्मेदारी, विकास, समरसता आदि।

1. **शिक्षा** :– परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने के लिए शिक्षा देना बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ कुछ कदम हैं जिनका अनुसरण किया जा सकता है:–

- **खुली बातचीत** :– पहले तो, परिवार के सदस्यों के बीच खुली और सहज बातचीत को प्रोत्साहित करें। इसके माध्यम से लैंगिक समानता के महत्व को समझाएं और उनसे इसके बारे में उनके विचार साझा करें।
- **उदाहरण सेट करें** :– परिवार के व्यक्तियों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने के लिए, आप स्वयं ही उनके सामने एक अच्छा उदाहरण प्रदान कर सकते हैं। अपने व्यवहार और विचारों के माध्यम से उन्हें दिखाएं कि आप लैंगिक समानता को कितना महत्व देते हैं।
- **शिक्षा और जागरूकता** :– लैंगिक समानता के विषय में जागरूकता फैलाने के लिए, आप परिवार के सदस्यों को संबंधित लेखों, किताबों या वीडियोज़ का प्रसार कर सकते हैं। विभिन्न समाधान और निर्देशों को साझा करने के माध्यम से उन्हें लैंगिक समानता के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- **समर्थन और प्रेरणा** :– अपने परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता को समर्थन और प्रेरणा का स्रोत बनाए रखने के लिए, उन्हें उनकी भूमिका में महत्वपूर्ण महिलाओं और पुरुषों के उदाहरण दिखाएं।
- **समाज में योगदान** :– लैंगिक समानता के महत्व को समझाने के लिए परिवार के सदस्यों को समाज में इसके लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करें, जैसे कि समाज सेवा, जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल होना या अन्य लोगों की सहायता करना।

ये सभी कदम परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने में मदद कर सकते हैं और एक समर्थ सम्मानित और समरस परिवार की भूमिका को मजबूत कर सकते हैं।

2. **समर्थन** :– परिवार के सदस्यों के लिए समर्थन और प्रेरणा का स्रोत बनना उनके विकास और समृद्धि में महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित कुछ तरीके हैं जिनके माध्यम से हम परिवार के सदस्यों का समर्थन और प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं:–

- **सहयोग और प्रोत्साहन** :– परिवार के सदस्यों को उनके साथी के रूप में सहयोग करें और उन्हें

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

- **उन्नति के लिए अवसर प्रदान करें** :– उन्नति के लिए नए अवसर प्रदान करें और उन्हें अपनी क्षमताओं का परिचय कराने के लिए प्रेरित करें।
- **उनके सपनों को समर्थन करें** :– उनके सपनों और लक्ष्यों के प्रति समर्थन और आदर्शों को बढ़ावा दें, और उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए सहायता करें।
- **संवाद और सुनवाई** :– उनके मन की स्थिति को समझें, उनकी बात सुनें, उनके विचारों का सम्मान करें और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करें।
- **सकारात्मक प्रतिक्रिया** :– उनकी प्रतिभा, प्रयासों और उपलब्धियों को सकारात्मक रूप से निभाएं और सराहें।
- **संघर्ष में सहायता** :– जब आपके परिवार के सदस्य किसी संघर्ष का सामना कर रहे हों, तो उनके साथ होकर समाधान निकालने में सहायता करें और उन्हें प्रेरित करें कि वे संघर्षों का सामना कर सकते हैं।
- **स्वतंत्रता और स्वाधीनता का समर्थन** :– उन्हें स्वतंत्रता और स्वाधीनता का समर्थन करें ताकि वे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से सफलता प्राप्त कर सकें।

इन सभी तरीकों से हम परिवार के सदस्यों के लिए समर्थन और प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं और उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर करने में मदद कर सकते हैं।

3. **बातचीतः**– खुली बातचीत के माध्यम से लैंगिक समानता पर विचार करना चाहिए। परिवार में बातचीत के माध्यम से लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक स्वाभाविक माध्यम है जिससे बच्चों को समझाया जा सकता है कि सभी लोगों को समान अधिकार और स्वतंत्रता मिलनी चाहिए चाहे वे लड़के हों या लड़कियां। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण तरीके हैं जिनसे हम अपने परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करके लैंगिक समानता को समझा सकते हैं:–

- **समझौता और संवाद** :– बच्चों को यह समझाएं कि लड़के और लड़कियों के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्हें समझाएं कि सभी को उनके विचारों, भावनाओं और अधिकारों का समान रूप से मूल्य देना चाहिए।
- **उदाहरण स्थापित करें** :– अपने परिवार के सदस्यों को समझाने के लिए हम स्वयं उदाहरण स्थापित कर सकते हैं। उनके साथ लड़कों और लड़कियों के बीच समान व्यवहार करें और उन्हें समानता की महत्ता समझाएं।
- **जागरूकता बढ़ाएं** :– बच्चों को लैंगिक समानता के महत्व पर जागरूक करने के लिए उन्हें इसके बारे में पुस्तकें, फिल्में और अन्य संसाधनों से अवगत कराएं।
- **सवालों का समर्थन** :– अपने बच्चों के साथ खुलकर बातचीत करें और उनके सवालों का समर्थन करें। यदि वे किसी भी प्रकार के समानता या विभेद के बारे में सवाल पूछते हैं, तो उन्हें सही जानकारी और समझ प्रदान करें।
- **संवैधानिकता की प्रेरणा** :– बच्चों को समझाएं कि लैंगिक समानता एक मूलभूत मानवीय अधिकार है और इसका समर्थन करना चाहिए। उन्हें बताएं कि इसका मतलब है कि सभी लोगों को समान रूप से विकास, स्वतंत्रता और सम्मान की अपेक्षा की जानी चाहिए।

बातचीत के माध्यम से बच्चों को लैंगिक समानता की महत्वपूर्णता समझाने के साथ हम उन्हें इस मूल्यवान धारणा का पालन करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यह उन्हें समाज में न्याय की भावना को समझने में मदद करेगा और उन्हें समानता के महत्व को समझने में सहायक होगा।

4. **उदाहरण** :– परिवार के व्यक्तियों को लैंगिक समानता के अच्छे उदाहरण प्रदान करना। लैंगिक समानता के अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित तरीके हो सकते हैं:–

- **संयुक्त निर्णय और सहभागिता** :– परिवार के सदस्यों को संयुक्त निर्णय लेने और पारिवारिक कार्यक्रमों, उत्सवों या संघर्षों में समान रूप से सहभागी होने का उदाहरण प्रस्तुत करें।
- **काम का समान वितरण** :– परिवार के सदस्यों को विभिन्न कार्यों का समान रूप से हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह स्थितियों के अनुसार हो सकता है जैसे घरेलू काम, पैसे कमाने या फैसलों में समान योगदान।
- **उत्पादक और उत्कृष्ट कामकाजी साथी** :– परिवार के सदस्यों को उत्पादक और उत्कृष्ट कामकाजी साथी के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रेरित करें, चाहे वे लड़का हों या लड़की।
- **समर्थन और प्रेरणा** :– लैंगिक समानता के मुद्दों

पर विचार करने और समर्थन प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करें। किसी भी सदस्य के सपनों और लक्ष्यों का समर्थन करने में समान रूप से विश्वास करें।

- **बातचीत और समझौता** :– समय–समय पर, बच्चों के साथ लैंगिक समानता पर बातचीत करें। उन्हें समझाएं कि सभी को इस मामले में समान अधिकार होते हैं और वे इसे समर्थन करने की महत्वपूर्णता को समझें।
- **सामाजिक आंतरिकता का उत्कृष्ट उदाहरण** :– अपने परिवार के सदस्यों को सामाजिक आंतरिकता, उत्कृष्ट संबंध और सम्मान भाव से बात करने का उदाहरण प्रस्तुत करें।

ये उदाहरण परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने में मदद कर सकते हैं और उन्हें इसे प्रैक्टिकल रूप से अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

5. **साझा जिम्मेदारी** :– सभी सदस्यों को समान रूप से घरेलू कामों और जिम्मेदारियों में शामिल करना। लैंगिक समानता को समर्थन और संरक्षण करने के लिए परिवार में साझा जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक समर्पित और सम्मानित परिवार में सभी सदस्यों को समान अधिकार, जिम्मेदारियाँ और स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं जो परिवार के सदस्यों के लिए होती हैं:–

- **शिक्षा और संज्ञान को संवाहित करना** :– परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने का महत्वपूर्ण काम होता है। इसके लिए उन्हें उचित शिक्षा और जागरूकता प्रदान की जानी चाहिए।
- **साझा गृह कार्य** :– घर के कामों को संभालने में सभी सदस्यों को साझा योगदान देना चाहिए, चाहे वह घरेलू काम हों या बाहर के काम।
- **समान मुद्दों पर संवाद** :– सभी सदस्यों को लैंगिक समानता और उससे जुड़े मुद्दों पर खुलकर बातचीत करने का अवसर मिलना चाहिए।
- **समर्थन और समर्पण** :– परिवार के सदस्यों के बीच समर्थन और समर्पण का माहौल होना चाहिए।
- **बच्चों की शिक्षा** :– बच्चों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने और उन्हें लैंगिक संरक्षण, समर्थन और समानता की महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करने की ज़िम्मेदारी भी परिवार की होती है।
- **अदालत और सम्मानिता का समर्थन** :– परिवार में सम्मान और अदालत के मानकों का पालन करने का माहौल होना चाहिए, जिससे किसी भी प्रकार का भेदभाव या न्यायिक अन्याय न हो।

लैंगिक समानता की भूमिका को परिवार में साझा करने से समाज में सामाजिक सुधार और प्रगति के मार्ग को बढ़ावा मिलता है।

6. **विकास** :– परिवार के सदस्यों को समाज में समान रूप से विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए। लैंगिक समानता को परिवार में स्थायी रूप से स्थापित करने के लिए परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के लिए प्रोत्साहन करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए:–

- **शिक्षा और जागरूकता** :– परिवार के सदस्यों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने के लिए उचित शिक्षा और जागरूकता प्रदान की जानी चाहिए। इसके लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करना और समर्थन करना महत्वपूर्ण है।
- **उदाहरण स्थापित करें** :– परिवार के वयस्क सदस्यों को अपने बालक/बालिकाओं के साथ लैंगिक समानता के मामले में उदाहरण स्थापित करना चाहिए। वे समझाएं कि सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए।
- **खुले और सहयोगपूर्ण बातचीत** :– परिवार के सदस्यों को खुले मन से लैंगिक समानता पर बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उन्हें अपने विचारों को साझा करने और उनके विचारों को समझने का मौका मिलता है।
- **बच्चों को समझाना** :– बच्चों को लैंगिक समानता के महत्व को समझाने के लिए, उन्हें समय–समय पर संवाद में शामिल किया जाना चाहिए। उन्हें लैंगिक समानता, समर्थन और समानता के महत्वपूर्ण सिद्धांतों की समझ और स्वीकृति प्रदान करनी चाहिए।
- **सामाजिक पर्यावरण में प्रभाव डालें** :– परिवार के सदस्यों को अपने सामाजिक पर्यावरण में लैंगिक समानता का समर्थन करना चाहिए। वे लोगों के बीच समानता और समर्थन के मानकों को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

ये सभी कदम लैंगिक समानता को परिवार में विकासित करने में मददगार हो सकते हैं, जिससे समर्थ और समान या समानाधिकार के एक समृद्ध परिवार का

निर्माण हो सके।

7. **समरसता** :– विभिन्न लैंगिक भूमिकाओं को समरसता से स्वीकार करना चाहिए। लैंगिक समानता को परिवार में स्थापित करने के लिए समरसता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। समरसता वास्तविक और स्थिर संबंधों का आधार होती है, जिसमें समानता, सम्मान और साथीपन की भावना होती है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं जो परिवार में समरसता को प्रोत्साहित करते हैं:–

- **संवेदनशीलता और सहभागिता** :– समरसता का आधार है संवेदनशीलता और सहभागिता। परिवार के सदस्यों को एक–दूसरे की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और उनके साथ सहभागिता करनी चाहिए।
- **समर्थन और सम्मान** :– परिवार के सदस्यों को एक–दूसरे के विचारों, भावनाओं और प्रतिभाओं का समर्थन करना चाहिए। समर्थन और सम्मान की भावना होने से सदस्यों के बीच समरस संबंध बनते हैं।
- **सामंजस्य और समझौता** :– समरसता का मतलब है सामंजस्य और समझौता करना। परिवार के सदस्यों को एक–दूसरे के साथ समझौता करने और उनकी जरूरतों को समझने की क्षमता होनी चाहिए।
- **समान संघर्ष और लाभ** :– समरसता में समान संघर्ष और लाभ का अनुभव होता है। सभी सदस्यों को समान अवसर मिलने चाहिए और उन्हें समान रूप से साथ मिलकर संघर्ष करने और लाभ को बाँटने की क्षमता होनी चाहिए।
- **समान अधिकार और जिम्मेदारी** :– समरसता में सभी सदस्यों को समान अधिकार और जिम्मेदारियाँ मिलती हैं। कोई भी सदस्य अपनी जिम्मेदारियों का पालन करने के लिए संबलित होता है और उन्हें समान रूप से समर्थन प्राप्त होता है।

इन तत्वों के संगठित रूप के अनुसरण से परिवार में समरसता की भावना और वातावरण विकसित होता है। जिससे लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करने में मदद मिलती है। एक समर्थ और सम्मानित परिवार न केवल अपने अंदर लैंगिक समानता को स्थापित करता है, बल्कि समाज में भी इसे प्रोत्साहित करता है। इस तरह के परिवार से ही समाज में व्यापक परिवर्तन आ सकता है जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष :– लैंगिक समानता की दिशा में अभी हमें बहुत काम करना है। इस बात की समीक्षा करनी होती है कि महिलाओं को लेकर लोगों की सोच में कितना बदलाव आया है। हालांकि पिछले कुछ साल में लैंगिक समानता की दिशा में काफी कामयाबी मिली है लेकिन महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को लेकर समाज की जो सोच है, इसका असर अब भी उनकी शिक्षा, रोज़गार और फैसला लेने की प्रक्रिया पर दिखता है। समाज ने महिलाओं के लिए जो मानक तय कर रखे हैं, वो लैंगिक असमानता को बरकरार रखने में अहम भूमिका तो निभाते ही हैं, साथ ही महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने और उनकी क्षमता का पूरा इस्तेमाल करने में रुकावट भी पैदा करते हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था के तहत ही बच्चों की परवरिश के दौरान हम लैंगिक भेदभाव के बीज बो देते हैं। ये ही बीज आगे चलकर हमारे समाज में लैंगिक अपराध को जन्म देते हैं। लैंगिक असमानता कोई एक ही दिन में आ जाने वाली बुराई नहीं है। असल में इसका संबंध हमारे दृष्टिकोण और परवरिश से है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- आचार्य श्रीराम शर्मा (2006), गृहलक्ष्मी की प्रतिष्ठा, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा
- सिन्हा, अरविन्द (2006) आपका व्यक्तित्व आपकी सफलता, रामचन्द्र अग्रवाल जयपुर पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003
- आचार्य महाश्रमण (2014), आओ हम जीना सीखें, जैन विश्व भारती, लाडनूं–341306
- आचार्य महाश्रमण (2014), सुखी बनो, जैन विश्व भारती, लाडनूं–341306
- कोठारी, गुलाब (2015), मानस, नारी और मातृत्व, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
- कोठारी, गुलाब (2016) मानसः संस्कृति और सभ्यता, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर।